पवित्रता की प्रतीक मां गंगा को अविरल निर्मल एवं स्वच्छ बनानें में युवाओं की भूमिका

इंदुजा दुबे

शोध छात्र संस्कृत विभाग
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सतना (मध्य प्रदेश)

डॉ अतुल कुमार दुबे

असिस्टेंट प्रोफेसर,
विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग
हर्ष विद्या मंदिर पी.जी. कॉलेज,
रायसी, हरिद्वार (उत्तराखंड)

गायत्री छन्द्सां माता, लोकस्य जहान्वी।
उभेते सर्वपापानां, नाशकारणतां गते।।

शोध सारांश– गायत्री वेदों की माता और लोकमाता गंगा जी हैं, ये दोनों सब पापों का नाश करने वाली हैं। गंगा महज एक नदी ही नहीं है, इसको हम माँ ऐसे ही नहीं मानते यह भारत की पहचान है एवं करोड़ों लोगों की जिसमे भारतीय ही नहीं वरन विदेशी नागरिकों की आस्था का केंद्र भी है। प्रारंभ में हिमालय से दो नदियाँ अलखनंदा व भागीरथी निकलती हैं। अलखनंदा की सहायक नदी धौलीगंगा, विष्णुगंगा तथा मन्दाकिनी हैं। भागीरथी गोमुख नामक स्थान से 25 किमी० लम्बे गंगोत्री हिमनद से निकलती है। भागीरथी और अलखनंदा देव प्रयाग में आकर मिलती है और यहाँ से आगे का सफर गंगा के नाम से होता है। हरिद्वार में पहली बार गंगा पहाड़ से निकालनें के बाद मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। मैदानी इलाके से होकर बहती हुई गंगा बंगाल की खाड़ी में बहुत सी शाखाओं में विभाजित होकर मिलती है। गंगा और बंगाल की खाड़ी के इस मिलने वाले स्थान को सुंदरवन के नाम से भी जाना जाता है। जो विश्व की बहुत सी प्रसिद्ध वनस्पतियों और बंगाल टाइगर का निवास स्थान भी है।

गंगाजल पवित्रता का प्रतीक है हमारे पवित्र ग्रन्थ और महापुरुषों ने भी गंगा की गुणवत्ता का बखान किया है। भारत ही नहीं, और केवल हिन्दू धर्म में ही नहीं, अपितु अनेक धर्म और देशों के धर्मात्मा विद्वानों ने भी गंगाजल के अध्यात्मिक गुण और प्रभावों की गाथा गाई है। जिस स्थान से गंगा उद्गम हुआ है, वह उन ऋषि–महात्माओं के तपोभूमि है, जो भारत ही नहीं वरन

विश्व की आध्यात्मिक चेतना के सूत्रधार हैं। निस्संदेह उस स्थान की आध्यात्मिक चेतना गंगाजल के साथ प्रवाहित होती है।

महर्षि भागीरथ ने अपने प्रचंड तप से जिस भागीरथी को स्वर्ग से उतरकर धरती पर प्रवाहित होने के लिए राजी किया था, वह तब से लेकर अब तक अनगिनत लोगों का उद्धार करती आ रही है। गंगा एक धारा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत की जीवनधारा अर्थात जीवनरेखा है, जो लगभग आधे देश को पोषण प्रदान करती है। हमारे धर्म अलग हो सकते है, संप्रदाय अलग हो सकते हैं, हमारी सोच अलग हो सकती है लेकिन हम सभी का उद्देश्य एक ही है की किसी भी तरह माँ गंगा को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। हम युवाओं को गंगा को अविरल और निर्मल करने बनाने में अपनी भूमिका सुनिश्चित करनी ही होगी नहीं तो हमारी आने वाली पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी।

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन भारत में गंगा के उद्गम स्थान और समय से लेकर हमारे वेदों में, पुराणों में, महाभारत आदि में जल एवं प्रकृति प्रदत्त निशुल्क प्राकृतिक संसाधनों का क्या महत्व है का वर्णन किया गया है। इसके आलावा अभी की स्थिति का संक्षेपतः अध्ययन एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष में करते हुए आज के समय में हम युवाओं की क्या भूमिका गंगा को बचाने में हो सकती है, और माँ गंगा के प्रति हमारी संवेदना कैसी होनी चाहिए, एक माँ को अपनी संतान से क्या अपेक्षाएं होती है इन्हीं सब बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए इस शोध पत्र को लिखने का प्रयास किया गया है।

आपो हिस्ठा मयोभुवस्था न ऊर्जे दधातन महे रणाथ चक्षसे।।

भावार्थ– हे जल! आपकी उपस्थिति से वायुमंडल बहुत तरोताजा है, और यह हमें उत्साह और शक्ति प्रदान करता है। आपका शुध्द सार हमें प्रसन्न करता है, इसके लिए हम आपका आदर करते हैं।

आयुर्वेद में गंगाजल को शारीरिक और मानसिक रोगों का निवारण करने वाला और आरोग्य तथा मनोबल बढ़ाने वाला बताया गया है।

गंगा वारि सुधा समं बहु गुण पुण्यं सदायुष्करं, सर्व व्याधि विनाशनम् बलकरं वीर्यं पवित्र परम।।
हृद्यम दीपन पाचनं सुरुचिरम्मिष्टम् सु पथ्यं लघु–स्वांतध्वान्त निवारि बुद्धि जननं दोष त्रघनं वरंम।।

अर्थात गंगा का जल अमृततुल्य, बहुगुणयुक्त, पवित्र, उत्तम, आयु, को बढ़ाने वाला, सर्व रोगनाशक, बलवीर्य वर्धक, परम पवित्र, हृदय को हितकर, दीपन–पाचन को बढ़ाने वाला, रुचिकारक, मीठा, उत्तम पथ्य होता है तथा लघु और भीतरी दोषों का नाशक, बुद्धि जनक, तीनों दोषों का नाश करने वाला सब जलों में श्रेष्ठ है।

–वांग्मय क्र. 34, प्र. 4.213–216

भगवान के सर्वोत्तम व्यक्तित्व का अपने भक्त के लिए जो प्रसाद है वह है गंगा जलय मन वह जो भगवान के श्री चरणों में निमग्न होय भगवान हरि का वह दिन– एकादशी, ये सब पवित्र हैं और पवित्र करने वाले हैं।

–स्कंद पुराण

"भारत महान है, हिमालय महान है, परन्तु वह क्षेत्र हिमालय में जहाँ गंगा का जन्म हुआ विशेषतः महान है, क्योंकि वह स्थान वह है जहाँ गंगा भगवान् के चरणों में रहती है।"

–स्कंद पुराण

गंगा एवं हिमालय एक दुसरे से अविछिन्न रूप से जुड़े हैं। देवात्मा हिमालय एवं भागीरथी दोनों का इतिहास जहाँ तक ज्ञात हो पाया है, यही बताता है कि दोनों ने मिलकर श्रष्टि के आदि से अब तक ब्रह्त्तर भारत को सम्रद्ध संपन्न बनाने में नहीं, आस्था उन्नयन में भी महती भूमिका निभाई है। भारतीय संस्कृति का प्रथम मन्त्र गंगा का मन्त्र है। गंगा के किनारे ही पहला मंदिर बना था।

बंगला के प्रसिद्द कवी श्रीयुत द्विजेन्द्रलाल राय ने भारतीय आत्मा की अंतिम श्रध्दा व्यक्त करते हुए भावपूर्ण शब्दों में लिखा है–

परिहरि भव सुख दुःख जे खल, माँ शापित अंतिम शपन।।
वरषि श्रवणे तव जल कल–कल, वरषि सुप्ति मम नयन।।
वरषि शान्तिमम शंकित प्राणे, वरषि अमृत मम अंगे।।
माँ भागीरथी जहान्वी सुरधुनि, माँ कल्लोलिनी गंगे।।

अर्थात, हे कल्लोलिनि गंगे! तुम जन्म–जन्मान्तरों के दुखों को दूर करने वाली हो। अंतिम समय में मेरे शंकित मन और प्राणों को शान्ति और तृप्ति प्रदान करो। अपने अमृतमय जल की हमारे सम्पूर्ण अंगों में वर्षा करो।

कवियों और शास्त्रकारों द्वारा अभिव्यक्त इस श्रद्धा के पीछे कोई निराधार कल्पनाएँ और भावुकता नहीं हो सकतीं। किसी भी तत्व के प्रति हमारी अगाध श्रध्दा उसकी उपयोगिता और वैज्ञानिक गुणों के आधार पर ही हो सकती है। गंगाजल में ऐसे उपयोगी तत्व और रसायन पाए जाते है, जो मनुष्य की शारीरिक विकृतियों को ही नष्ट नहीं करते विशेष आत्मिक संस्कार जाग्रत करने में भी वे समर्थ हैं, इसलिए गंगाजल के प्रति इतनी श्रध्दा हमारे पुराणों, शास्त्रों आदि में हमारे ऋषियों ने व्यक्त की है। वैज्ञानिक परीक्षणों से भी यह बातें अब स्पष्ट होती जा रहीं है।

प्राचीन काल में जब भारत का अरब, मिश्र और यूरोपीय देशों से व्यापार चलता था, तब भी और इस युग में भी सभी देशों के नाविक गंगा की गरिमा और पवित्रता मानते रहे है। डॉ नेल्सन ने लिखा है कि गंगा नदी का जो जल भारत से जहाजों में ले जाते है वह लन्दन पहुँचने तक खराब नहीं होता, परन्तु टेम्स नदी का जो जल लन्दन से जहाजों में भरा जाता है, वह बम्बई पहुँचने के पहले ही खराब हो जाता है।

फरांस के प्रसिद्ध डॉ0 डी हेरेल ने जब गंगाजल की इतनी प्रशंसा सुनी तो वे भारत आये और वैज्ञानिक परीक्षण किया। उन्होंने पाया कि इस जल में संक्रामक रोगों के कीटाणुओं को मारने की अदभुत शक्ति है। डॉ हेनकेन आगरा में गवर्नमेंट साइंस डिपार्टमेंट में एक बड़े अफसर थे। प्रयोग के लिए उन्होंने जो जल लिया, वह वह जल वाराणसी के उस स्नान घाट का था, जहाँ बनारस की गन्दगी गंगाजी में गिरती है। परीक्षण से पता चला कि उस जल में हैजा के लाखों कीटाणु भरे पड़े हैं। 6 घंटे तक जल रखा रहा, उसके बाद दुबारा जाँच की गयी तो पाया कि अब उसमे कीड़ा नहीं है, जल पूर्ण शुद्ध है, हैजे के कीटाणु अपने आप मर चुके हैं।

यह घटना अमेरिका के प्रसिद्ध साहित्यकार मार्कट्वेन को आगरा प्रवास के समय ब्योरेवार बताई गयी, जिसका उन्होंने भारत यात्रा–वृतांत में जिक्र किया है। इस प्रयोग का वर्णन प्रयाग

विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के अध्यापक पंडित दयाशंकर दुबे, एम.ए., एल.एल.बी. नें भी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'श्री गंगा रहस्य' में किया है।

बर्लिन के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ0 जे. ओलिवर ने तो भारत की यमुना, नर्मदा, रावी, ब्रहम्मपुत्र, आदि अनेक नदियों की अलग अलग जाँच करके उनकी तुलना गंगाजल से की और बताया कि गंगा का जल न केवल इन नदियों की तुलना में श्रेष्ठ है, वरन संसार की किसी भी नदी में इतना शुध्द कीटाणुनाशक और स्वास्थ्यकर जल नहीं होता।

"यदि एक जीव एक तरफ तपस्या से, त्याग से, बलिदान से, जिसकी प्राप्ति में समर्थ है, तो दूसरी तरफ निस्संदेह केवल भागीरथी–गंगा के किनारे रहने और स्नान करने मात्र से वह प्राप्त होता है।"

महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय 27, श्लोक 26

धर्म ही नहीं किन्तु आयुर्वेद की दृष्टि से भी गंगाजल में जो गुण पाए जाते है, उन्हें देखकर भी चकित रह जाना पड़ता है। चरक ने जिसका काल आज से दो वर्ष पूर्व है– गंगाजल को पथ्य माना और कहा भी है कि– "औषधि जहान्वी तोयं" अर्थात "गंगाजल औषधि है।", इसके सामान संसार की कोई औषधि नहीं है। चक्रपाणि दत्त ने 1060 वर्ष पूर्व ही खोज करके बताया था कि गंगाजल स्वास्थ्यवर्धक है। "भंडारकर ओरिएंटल इंस्टिट्यूट" में एक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ है, "भोजन कौतूहल"। उसमे गंगाजल की उपयोगिता बताते हुए लिखा है– गंगाजल श्वेत, स्वादु, स्वच्छ, रुचिकर, पथ्य, भोजन पकाने योग्य, पाचक, शक्ति बढ़ाने वाला, और बुद्धि को तीव्र करने वाला है।

गंगा के आध्यात्मिक परिचय के साथ–साथ भौतिक परिचय भी कम महत्व का नहीं है। वह अनेक वह अनेक नदियों का सहयोग अपनें में समन्वित कर सकने में सफल हुई है, अर्थात उसका गौरव इसमें भी है कि उसनें अपनें में एक बड़ा परिवार घुलाया और आत्मसात किया है। गंगा में कितनी ही छोटी–बड़ी नदियाँ मिलती हैं। इनमें से कितनी ही उल्लेखनीय हैं। यथा– नन्दप्रयाग में विष्णु गंगा, स्कंद प्रयाग में पिंडर, रूद्र प्रयाग में मन्दाकिनी, देवप्रयाग में अलकनंदा, प्रयाग में यमुना, आगे चलकर गोमती, घाघरा, गण्डक, कोसी, सरयू, ब्रह्मपुत्र, रामगंगा, बागमती, महानंदा जैसी बड़ी नदियाँ उसी में जा मिलती हैं।

गंगा तट पर मैदानी इलाके में काशी और प्रयाग तीर्थ प्रसिद्ध हैं। हिमालय क्षेत्र में कई काशी और कई प्रयाग हैं जैसे– गुप्तकाशी, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, विष्णुप्रयाग, सोनप्रयाग, देवप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग आदि।

गंगा का कुल जल ग्रहण क्षेत्र 10 लाख 80 हजार वर्ग किलोमीटर है। गंगा नहरों से इन दिनों लगभग 6 लाख 95 हजार हेक्टेयर भूमि की सिंचाई भी होती है।

जैव विविधिता की बात करें प्रथ्वी पर जितने नदी क्षेत्र हैं, उनमें सबसे अधिक लोग गंगा क्षेत्र में निवास करते हैं। 100 में से 43 भारतीय इस क्षेत्र में निवास करते हैं। गंगा के इस विचित्र परिपथ पर जीवों और वनस्पतियों की अतुलनीय प्रजातियाँ हैं। इसके परिपथ पर नाना प्रकार के पक्षी, घड़ियाल, मगरमच्छ, मछलियाँ, कछुए, आदि पाए जाते है। गंगा तटवर्ती क्षेत्र अपनें आप में शान्त व अनुकूल पर्यावरण के कारण जैव विविधता के भंडार हैं। गंगा में पायी जानें वाली शार्क के प्रति विश्व के वैज्ञानिकों की काफी रूचि है। सबसे बड़ा डेल्टा सुंदरवन क्षेत्र विश्व की बहुत

सी वनस्पतियों और बंगाल टाइगर का गृह क्षेत्र है। गंगा प्रतिवर्ष 73 करोड़ टन मिट्टी बहाती है, जिससे इसके डेल्टा में बड़े मैन्ग्रोव वन का निर्माण हुआ है।

यहाँ पर ध्यान आकर्षित करना होगा कि मनुष्य सभ्यता की जननी से असभ्य व्यवहार क्यों कर रहा है, और कब तक करेगा? एक चीनी यात्री ने अपने यात्रा वृतांत में लिखा था कि भारत की नदियों में दूध बहता है। यह कथन भारतीय नदियों के निर्मल और पुष्टिदायक स्वरूप का प्रमाण है। परन्तु विगत वर्षों में हमने इन सरिताओं को हमने दूध तो क्या जल बहने लायक भी नहीं छोड़ा है? आज–कल नदियाँ मल–मूत्र वाहिनी बनी हुई हैं। समझदारों की इस नासमझी पर हैरानी होती है।

औद्योगिकीकरण एवं विकास से प्रभावित तड़पती माँ गंगा (20 मार्च 2017 को आये ऐतिहासिक फैसले में उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने गंगा को जीवित मानव का दर्जा देने का आदेश दिया) एवं उसकी सहायक नदियों में न जानें कितने प्रकार के जैसे– औद्योगिक अपशिस्ट, रासायनिक खाद, कीटनाशक, खतरनाक कचरा, फ्लाय ऐश, कचरा, प्लास्टिक, अस्पतालों का रडियोधर्मी कचरा, आदि। इसके अलावा अन्य बहुत सी परम्पराएँ जैसे पर्व स्नान, निर्माल्य (बासी फूल), शवों को प्रवाहित करना, पशुओं, वाहनों, कपड़ों की धुलाई, मूर्ति विसर्जन, उत्खनन, अतिक्रमण–भवन आदि। वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फण्ड (WWF) 2013 के आंकड़े बताते है कि प्रदूषण के कारण 1800 डालफिन से भी कम जीवित बची हैं। प्रदूषण की चपेट में ये मरी जा रहीं है या दुर्बल होती जा रहीं हैं। जल जीवों की अनेकों प्रजातियाँ अब तक पूरी तरह से लुप्त हो चुकीं हैं। न्यूनतम जल प्रवाह एवं प्रदुषण के चलते जैव विविधता संकट में है। यहाँ पर विचार करने की बात यह है कि अगर गंगा रूठ गयी तो क्या होगा?

- रेगिस्तानी होगी 10.80 लाख हेक्टेयर भूमि।
- लगभग 48 करोड़ भारतवासी तरसेंगे बूंद–बूंद को।
- ऋतुओं का चक्र पलट जायेगा।
- अनाज की कमी अर्थात पैदावार कम होने से महंगाई दर बढेगी और लोग भूख से मरेंगे।
- कृषि, उद्योग, पशुपालन, व्यापार का होगा दिवालिया।
- मरते को अंतिम समय में नहीं उपलब्ध होगा गंगा जल, तब कैसे होगी मुक्ति?
- कैसे देंगे सत्य की दुहाई, कैसे लेंगे गंगाजल की शपथ?

> नमामि गंगे जैसी योजनाओं को सिद्ध करने के लिए और मां गंगा के अस्तित्व को बचाने के लिए युवाओं सकारात्मक विचार के साथ लोगों को जागरूक करना चाहिए। केंद्र और राज्य सरकार के द्वारा औद्योगिकरण एवं अन्य प्रदूषण के स्रोतों से बचने के लिए कठोर कदम उठाए जाने चाहिए। इसके साथ–साथ सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से लोगों को इस बात से अवगत कराना नितांत आवश्यक है की मां गंगा हमारे संस्कृति की धरोहर है।

अब अविलम्ब निर्णय करना ही होगा, हम गंगा को माँ मानते हैं या कूड़े–कचरे का घर। पोषण चाहते हैं या शोषण कर उसका अस्तित्त्व मिटा देना चाहते हैं।

गंगा को प्रदूषित होने से बचाने के लिए युवाओं के द्वारा किये जा सकने वाले कार्यदृ वैसे तो किसी भी काम को करने में युवाओं की भूमिका अतुलनीय होती है अर्थात किसी भी देश के विकास का आधार स्तम्भ ही युवा होते हैं और चूँकि भारत में सबसे ज्यादा युवा आबादी है। दुनियां में 121 करोड़ युवा है, इनमे सबसे ज्यादा 21: भारतीय है और दुसरे नंबर पर चीन 14: है (दैनिक भास्कर की रिपोर्ट)। इस आधार पर हम कह सकते है जिस देश की नसों में सबसे ज्यादा युवा खून दौड़ रहा हो वहां क्या असंभव है। गंगा में 80: से भी ज्यादा प्रदूषण के लिए गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों के किनारे स्थित कस्बों, शहरों से आने वाला गैर शोधित घरेलु और फैक्ट्रियों से निकलने वाला अपशिस्ट जिम्मेदार है।

वर्तमान में गंगा नदी के विकास में आज के युवाओं द्वारा उठाये जा सकने वाले कदम निम्नवत है। युवाओं के दवारा किये जाने वाले ये प्रयास गंगा नदी को पवित्र, अविरल और निर्मल बनानें में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं–

1. ठोस अपशिस्ट प्रबंधन में युवाओं का योगदान– हमने नदियों को कूड़ा गाड़ी और शहरों में रोड के किनारे खाली पड़े स्थानों को कूड़ा घर बना लिया है। युवाओं के लिए इस सबको रोकनें के लिये आगे आना पड़ेगा और लोगों को वैज्ञानिक तरीके से प्यार से समझाना होगा कि ये रोड साइड कूड़ा फेकने से क्या क्या हानि हमारे दैनिक जीवन में हो रही है, चाहे वो डेंगू का फैलना हो, चाहे हैजा का फैलना हो, चाहे मलेरिया का फैलना हो और चाहे भूजल का प्रदूषित होना हो या भूजल का स्तर दिन प्रतिदिन कम होना और उसकी गुणवत्ता में कमीं आना हो। ये जितना भी हमारे घरों से अपशिस्ट निकलता है चाहें वो ठोस हो या तरल हो वो अंत में किसी न किसी नदी में मिलेगा और नहर में ही और उसके बाद उस जलस्त्रोत की गुणवत्ता को कम करेगा और धीरे धीरे खतम करेगा। युवाओं के लिए इस पुनीत और पावन काम में बढ़ चढकर अपनी भागेदारी सुनिश्चित करनी होगी जैसे जो युवा गंगा किनारे ही रहते है वो एक टीम बनाकर लोगों को जागरूक कर सकते है।

एक सबसे जरुरी काम ये भी है कि घाटों के किनारे कूडेदानों की उचित व्यवस्था हो और उनको सही समय पर खाली भी कराया जाय। जिससे होता क्या है कि कभी कभी लोगों के लिए कूड़ेदान नहीं दिखाई देने पर भी या भरे हुए होने पर भी घाटों के किनारे ही हम कूड़ा, पूजा की सामग्री, पुराने कलेंडर, फोटो और आदि ऐसी सामग्री जो हमें नहीं फेकनी चाहिए वो हम फेंक देते है या गंगा जी में प्रवाहित कर देते है क्योंकि कुछ हमारे ऐसे पुराने संस्कार भी है या यहाँ रूढ़िवादिता कहें तो भी गलत नहीं होगा की पुराने कैलेंडर, फोटो, पूजा सामग्री आदि को गंगा में प्रवाहित करें तब ही हमें मुक्ति मिलेगी। जबकि ऐसा बिलकुल भी सही नहीं है एक तरफ हम गंगा को माँ कह रहे है दूसरी तरफ हम उसको अपवित्र कर रहे है। मुक्ति हमें इससे नहीं मिलेगी वरन इससे मिलेगी जब हम इसको साफ रखेगें या साफ रखने में सहयोग करेगें क्योकि जब गंगा साफ होगी तभी हम इसके जल का आचमन और स्नान कर सकेंगे और अपनें आपको पवित्र कर सकेगें। इसके लिए लोगों को जागरूक करने के लिए युवाओं की भूमिका प्रमुख हो सकती है और इसमें युवाओं को बढचढकर अपना योगदान देना चाहिए।

2. <u>घाटों के किनारे किनारे पौधारोपण और उनकी देखभाल में युवाओं की सक्रियता–</u> गंगा को प्रदुषण मुक्त करने में घाटों के किनारे पौधारोपण करना एक बहुत ही अच्छा और कारगर उपाय हो सकता है। जिसके अंतर्गत तटों पर सघन वृक्षारोपण और गौमुख से लेकर गंगासागर तक गंगा के किनारे किनारे ऐसे वृक्षों का पौधारोपण करना अर्थात हरी चूनर ओढ़ाना जो जल्दी उगें और जल प्रदुषण को भी कम कर सकें उनका वृक्षारोपण करना प्रमुख है। इस तकनीक को फायटोरिमेंडियेशन के नाम से भी जाना जाता है।

पोधारोपण करना और उनकी देखभाल करने के लिए युवाओं के लिए आना चाहिए क्योंकि पौधारोपण करने से ही काम नहीं चलता जैसे कुछ दिनों तक छोटे बच्चे की देखरेख बहुत जरुरी होती है वैसे ही पौधा लगाने के बाद उसकी देखरेख भी उतनी ही जरुरी होती है और ये काम युवा बखूबी कर सकते है।

3. <u>लोगों को जागरूक करने में युवाओं की भूमिका–</u> चूँकि युवाओं की बात सुनना सभी लोग पसंद करते है और जो शिक्षित युवा हैं या जो नहीं है उनको प्रशिक्षित करके लोगों को जागरूक करने का काम युवाओं के द्वारा किया जा सकता है जिसका प्रभाव तत्काल प्रभाव से हमें देखने को मिलेगा। इसके अलावा बच्चों बहुत से ऐसे प्रोग्राम है जिनके द्वारा समाज को जागरूक कर सकते है जैसे नुक्कड़ नाटक, फेस पेंटिंग, पोस्टर प्रतियोगिता, कोई फिल्म दिखाकर आदि।

मां गंगा के अस्तित्व को बचाने के लिए करने योग्य कार्य–

- ✓ घर की पूजन सामग्री, बासी फूल एवं अन्य सामग्री की खाद बनाएं।
- ✓ पालीथीन के स्तन पर कागज एवं कपडे के थैलों का प्रयोग करें।
- ✓ मल–मूत्र त्याग हेतु शौचालयों का प्रयोग करें।
- ✓ पर्यावरण अनुकूल मूर्तियों की ही स्थापना करें।
- ✓ रसायानिक खाद, कीटनाशक के स्थान पर गोबर, केचुआ खाद एवं गौ मूत्र से बने कीटनाशकों का ही प्रयोग करें।
- ✓ गंदे पानी के सोकपिट (शोख्ता गढ्ढा) बनायें।
- ✓ अच्छा होगा यदि मिट्टी के स्थान पर आटे के दीपक बनाकर ही दीपदान करें।

न करने योग्य कार्य–

- × घर पर कचरा युक्त पूजन सामग्री, बासी फूल गंगा में ना डालें।
- × गंगा तट पर पालीथीन का प्रयोग ना करें।
- × घाट पर नहाने एवं कपडे धोने के साबुन का प्रयोग न करें।
- × गुटखा एवं शेम्पू के पाउच तटों के किनारे ण फेंकें।
- × तटों एवं घाटों पर मॉल मूत्र का त्याग ण करें।
- × प्लास्टर ऑफ पेरिस की बनी एवं जहरीले रंगों से रंगी मूर्तियों का विसर्जन गंगा में न करें।

× मल मूत्र युक्त पानी गंगा में ण प्रवाहित करें और न ही किसी को करने दें।
× शहर के गंदे नालों एवं उद्योगों का गन्दा–जहरीला पानी गंगा में प्रवाहित होने से रोकें।
× प्लास्टिक के दोनों में दीपदान न करें।
× मृत पशु, शव, अधजले शव गंगा में प्रवाहित न करें।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची</u> :–

1. निर्मल गंगा जन अभियान (हरिद्वार उत्तराखंड)।
2. पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत।
3. प्राचीन भारत में जलविज्ञान (राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान रूड़की हरिद्वार उत्तराखंड)।
4. Rig Veda Sanhita (3000 B.C), (i) Bhasya by Maharshi Dayananda Sarswati (Hindi), Published by Dayananda Sansthan, New Delhi-5.
5. The Valmiki Ramayana (800 B.C.), Gita Pess Gorakhpur, in two volumes with hindi translation.
6. The Mahabharata (400 B.C. to A.D), translated by Pt. Ramanayaran Datta shastri, Pandeya “Ram” Gita Press, Gorakhpur in six volumes.
7. Manusmriti (200 B.C. or earlier than that), Edited by Pt. Hargovinda Shastri, Chowkhamba Sanskriti Series Office, Varanasi-221001, 1984.
8. Narada Purana, lbid., 1984.
9. Padma Purana, lbid., 1986
10. Skanda Purana, (7th Century A.D.), lbid. 1988.
11. Vishnu Purana: Same as 24th above, 1989.
12. Sam Veda (3000 B.C.) Bhasya by Swami Dayananda Sarswati, Published by Dayananda Sansthan, New delhi-5.
13. Yajur Veda (later than Rig Veda), Bhasya by Swami Dayananda Sarswati, Published by Dayananda Sansthan, New delhi-5.
14. Atharva Veda (the latest Veda), Bhasya by Pt. Khem Karan Das Trivedi